अन्तरा-शब्दशक्ति

एक वार्तालाप यमराजजी से

उर्मिला मेहता

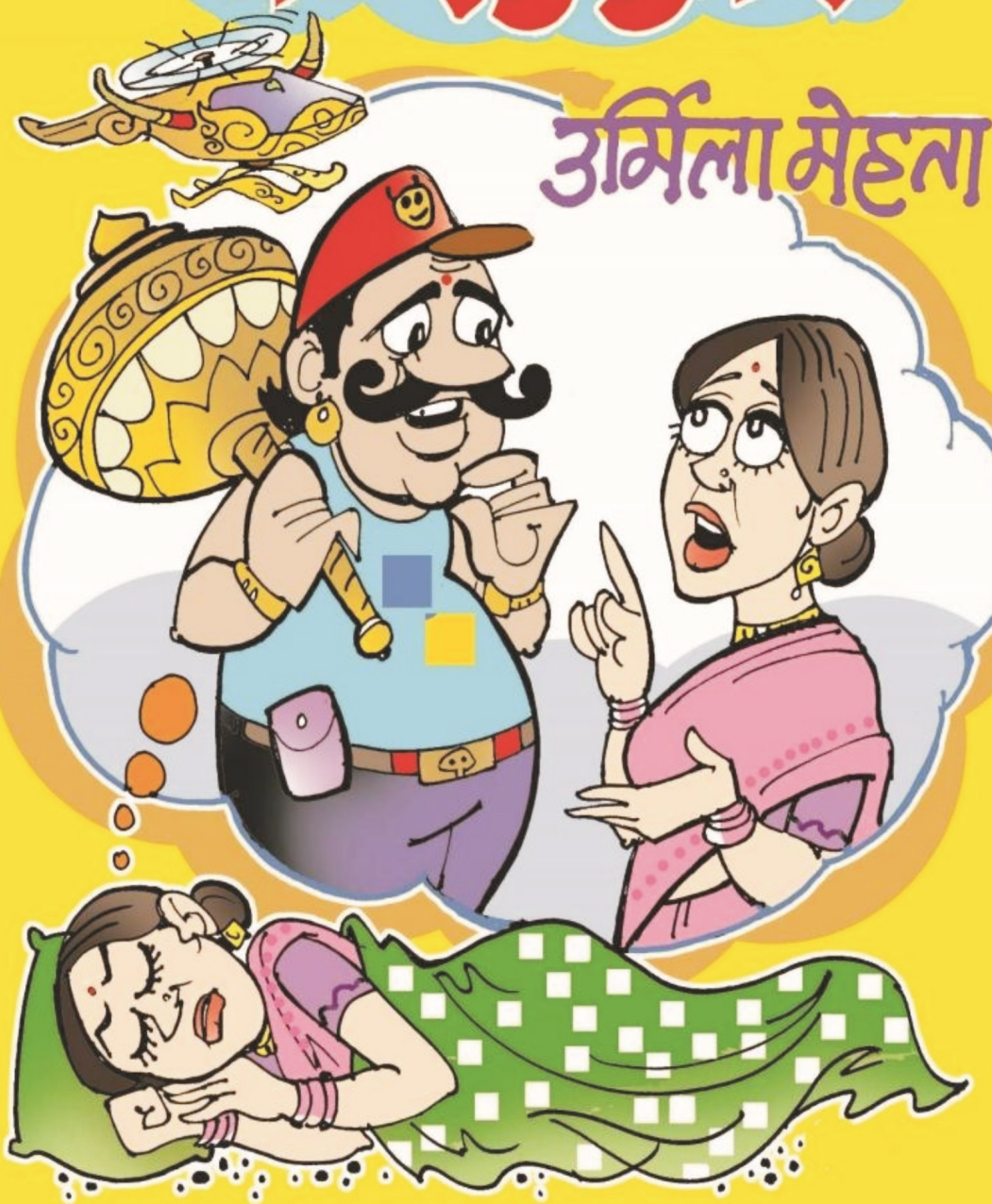

एक वार्तालाप यमराज जी से

उर्मिला मेहता

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-86666-80-2"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय- १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र)
४८१३३१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९
(मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१९- उर्मिला मेहता
आवरण चित्र- संदीप सोनी,वारासिवनी
मूल्य - ६०.०० रुपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
EK VARTALAP YAMRAJ JI SE BY URMILA MEHTA
वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

	भूमिका	5
1.	एक वार्तालाप यमराज जी से	7
2.	टी.वी. चेनल से बदलती मानसिकता	14
3.	मेरा भारत महान या ब्रिटेन ग्रेट?	19
4.	पर्यावरण	21
5.	वाट्स एप या वाट्स ऐब	23
6.	हमारी हिन्दी	24
7.	उपदेश	26
8.	गाय के गोबर से बने कण्डो का महत्व	27
9.	वो और हम	28
10.	एक बेमेल पर सफल विवाह	29

भूमिका

वुमन आवाज में लगातार अपनी चैथी पुस्तक प्रकाशित करवाते हुए, मुझे अत्यधिक हर्ष हो रहा है। आदरणीय प्रीति जी एवं आदरणीय शिखा जी की मैं बहुत हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने मेरी रचनाओं को पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया। अति सुदर, विषय से संबधित, कवर पेज तैयार किया। वुमन आवाज में प्रकाशित मेरी पुस्तकों के नाम है।

1. ऐसे बनाई मैंने अपनी पहचान।
2. एक कहानी कार की रचना प्रक्रिया।
3. पर्यावरण संरक्षण के परम्परागत तरीके
4. एक वार्तालाप यमराज जी से।

इनके अलावा मेरी तीन पुस्तकें पहले प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनके नाम हैं-

1. उर्मिला खण्ड काव्य
2. ऐसा आपको कब से है? हास्य व्यंग्य संग्रह
3. भावांजलि काव्य संग्रह

इनके अलावा नारी, स्त्री से संबंधित एक कविता 'नारी तू वसूधा क्यों बनी' भी वुमन आवाज में प्रकाशन के लिये भेजी है, जिनकी स्वीकृति मिल चुकी है।

मैं इन विद्वान साहित्यकारों की भी हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने अपनी समीक्षा द्वारा मुझे मार्गदर्शन प्रदान किया। साथ ही मैं अपने रिश्तेदारों और मित्रो की भी आभारी हूँ, जिन्होंने मेरी रचनाओं को सराहा एवं मुझे प्रोत्साहित किया।

1. डॉ. जयकुमार जी जलज सर।
2. सूर्यकाँत जी नागर सर।

3. डॉ. श्याम सुंदर निगम सर।
4. डॉ. चंद्रकाँत जी देवताले।
5. मालती जी जोशी।
6. डॉ. ऊर्मि शर्मा।
7. मंगला जी रामचंद्रन।
8. भाग्यश्री जी भालेराव।

पुनः मैं प्रीति जी एवं शिखा जी की आभारी हूँ।

इनके अतिरिक्त मैं अपने पिताजी स्व. श्री भगवती लाल जी रावल, ससुर जी स्व. श्री हरिशचंद्र जी मेहता और पति स्व. श्री गिरीश कुमार जी मेहता तथा अपने बच्चों राजीव, संदीप एवं आशुतोष की भी आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे लेखन के लिए प्रोत्साहित किया। साथ ही समस्त शुभेच्छुओं को मैं हृदय से धन्यवाद देती हूँ।

उर्मिला मेहता

एक वार्तालाप यमराज जी से

दुनियादारी के झमेले और देश-विदेश में फैली विभिन्न बीमारियों, प्राकृतिक आपदाओं, आतंकवाद दुर्घटनाओं, भ्रष्टाचार, अनाचार, दुराचार आदि के चलते मेरा मन आक्रोशित होते -होते अंत में त्रस्त हो गया, यह दुनिया यह महफिल मेरे काम की नहीं की तर्ज पर हमें भी दुनिया से वैराग्य हो गया। हमारी इच्छा होने लगी कि हम भी गौतम बुद्ध और अन्य ऋषि मुनियों की तरह इस असार-संसार को त्याग कर किसी वृक्ष के नीचे अथवा गुफा कंदरा या

हिमालय पर जाकर धूनी रमा ले और दुनिया को अलविदा कह दें, कि खुश रहो हर खुशी है तुम्हारे लिए। अब हम किसी पचड़े में नहीं पड़ना चाहते, वैसे भी हमारी उम्र अब वानप्रस्थ आश्रम की हो चली है, पर जब हमने अपने इस फैसले पर गौर किया तो समझ में आया कि यह सब करना प्रैक्टिकल रूप से संभव नहीं हैं, क्योंकि यदि पेड़ के नीचे आसन जमाते हैं, तो महिला होने के नाते सर्वप्रथम सुरक्षा का प्रश्न खड़ा होता है, दूसरा मच्छरो के प्रकोप से मलेरिया, फ्लू आदि का भय मुँह बाए खड़ा हो जाता है। गुफा कंदरा आदि में भी वही स्थिति है, अकेली महिला को सौ डर! सोचा अपनी उन सखियों को साथ ले लूँ जो-जो बात-बात में जीवन को कोसती थी, तो उनका जवाब भी इस संसार रूपी रणभूमि में डटे रहने को मिला, अब एक ही तरीका बचा था, कि हिमालय पर्वत पर जाकर साधना करके परमात्मा में लीन हो जाऐ तो उसमें भी समस्या दिखाई दी हिमालय की ठंडक की कल्पना मात्र से हम सिहर उठे पिछले साल ही बड़ी मुश्किल से खाँसी सर्दी ठीक हुई थी इसके अलावा एक विचार और आया की

हमारे इस प्रकार घर से कूच करने के बाद परिवार जनों के चिंता युक्त, रूआसे, भयभीत और गमगीन चेहरे क्या हम सहन कर पायेंगे, सच में माया महा ठगिनी हौ जानी। हमें प्रत्यक्ष रूप से अनुभव हो रहा था, कि यदि हम झांसी की रानी, ऋतंभरा या उमा भारती होते तो अपने बलबूते सब सेट कर लेते पर अब क्या करे अभिमन्यु की तरह इस मायाजाल के चक्रव्यूह में हम फस चुके हैं, जिससे सुरक्षित बाहर आना असंभव है, फिर करे तो क्या करे मैंने सोचा हाँ यह ठीक रहेगा, यह सोच कर मैंने ईश्वर को करूण स्वर में पुकारी हे ईश्वर! इस संसार रूपी मृग मरीचिका से मुझे मुक्ति दिलाओ, कहने भर की देर थी कि एक अलग ही प्रकार के व्यक्ति (दूसरे ग्रह के होने के नाते) मेरे सामने उपस्थित हो गए और बोले बालिके! तुम्हारी प्रार्थना मैंने सुन ली है और तुम्हें लेने आया हूँ, मैं आश्चर्य चकित हो गई, आप कौन हैं? और मुझे कहाँ ले जाना चाहते हैं उपस्थित महाशय ने कहा कि मैं यमराज हूँ और तुम्हारी प्रार्थना सुनकर तुम्हें लेने आया हूँ, चलो जल्दी करो मैं भयभीत हो गई कि हाय यह कैसे और किस रूप में गाना सार्थक हुआ, कि तुमने पुकारा और हम चले आये, जान तुम्हारी लेने आये रे। अब मैंने हिम्मत से काम लिया, ओखली में सिर दिया तो मूसले से डरना क्या? मैंने वार्तालाप जारी रखते हुए पूछा कि यदि आप यमराज जी हैं, तो आपका भैंसा कहाँ है? और आपके वे दो सींग कहाँ है? मैं कैसे विश्वास करूँ! मेरी इस बात पर उन्होंने जोर का अट्टहास किया और बोले नादान बालिके किस जमाने की बात कर रही हो जब तुम्हारी दुनिया में जेट कम्प्यूटर सैटेलाईट सब हैं तो हमारे पास तो इनसे भी ज्यादा आधुनिक तकनीकी वस्तुऐं हैं, वह देखो मेरा वाहन जिसे समझने के लिए तुम इसे हेलीकाप्टर कह सकती हो। यह वाहन-अर्थ व्हाया स्वर्ग या नरक चलता है, इसको यात्रियों के

अर्थात् आत्माओं के अनुसार बड़ा या छोटा भी किया जा सकता है। वैसे भी आत्मा अति सूक्ष्म होती है अतः बहुत कम जगह घेरती है इसके अलावा उसके साथ कोई लगेज भी नहीं होता। अरे मैं भी कहाँ तुम से बहस करने लगा सीधे तरीके से मेरे साथ चलो, मेरा टाइम वेस्ट मत करो, मैंने सोचा भी तो मामला गंभीर हो चला है, जल्दी से जल्दी कोई जुगत भिड़ानी होगी मैंने कहा वाह महाराज आपने मेरी इस प्रार्थना को इतनी तत्परता से सुन लिया जबकि करोड़पति होने, महादेवी वर्मा जैसी लेखिका होने और ऐश्वर्या राय जैसी सुंदरता प्राप्ति के लिए भी कई प्रार्थनाऐं की थी तब तो उन पर कोई कार्यवाही नहीं हुई। यमराज बोले वह सब अलग-अलग डिपार्टमेंट से संबंधित हैं जहाँ पर असंख्य अर्जिया लगी हुई हैं। मुझे बहुत कम प्रार्थना पत्र मिलते हैं, इसलिए मेरे विभाग में सुनवाई जल्दी होती है, अच्छा तो यह बात है, मैंने कहा तो अब यह बताइए कि मुझे कहाँ जाना होगा, स्वर्ग में या नर्क में? यमराज हसे और बोले तुम ही बताओं कि तुम किस योग्य हो। मैंने कहा कि मैंने तो अपने कई सारे अच्छे कर्म किये हैं। श्रीमद्भागवत गीता एवं कहाकवि वर्ड्सवर्थ के अनुसार कर्म को ही पूजा माना है। वर्क इस वरशिप। शेक्सपियर के अनुसार संसार को स्टेज और अपने आप को एक कलाकार की भाँति समझ कर सदा अपना कर्तव्य ही निभाया है। ऐसा क्या, तो ठीक है असलियत तो ऊपर जाने पर चंद्रगुप्त के रजिस्टर को देख कर ही पता लगेगी, यमराज जी बोले। मैं कुछ नहीं बोली चुप हो गई असहाय सी, फिर हिम्मत बटोरकर बोली महाराज अभी तो मैंने कुछ खास सुख उठाये ही नहीं हैं, मेरे छोटे-छोटे पोते-पोती है और तो और मेरा एक बेटा भी कुंवारा है, उसकी शादी भी करना है, पोते-पोती को भी खिलाना है, वे सब परदेश में रहते है, इसलिए यहाँ तो बहुत सारा काम बाकी है, मेरे लिए एक बार, मैं अपना घर व्यवस्थित कर लूँ बैंक आदि के

कागकाज घर वालों को सौंप दूँ, आखरी बार सबको इकट्ठा कर उनके साथ रह लूँ और उनको समझा दूँ कि मुझे खुशी-खुशी विदा करे, फिर मैं स्वयं समाधि में बैठ आऊँगी और श्री कृष्णम् शरणम मम बोलूँगी तो स्वयं श्री कृष्ण भगवान मुझे लेने आ जाऐंगे और आपको आने का कष्ट भी नहीं करना पड़ेगा। यमराज फिर हँसकर बोले यह तो वही बात हो गई की कद्दू में बैठी नानी ने शेर से कहा कि बेटी घर जाने दे ताजी मोटी होने दे फिर मुझे खाना और शेर ने विश्वास करके नानी को उसकी बेटी के घर जाने दिया और एक बार जो बुढ़िया अपनी बेटी के घर गई तो फिर उस रास्ते से लौटकर नहीं आई शेर बेचारा उसका रास्ता ही देखता रह गया। इतना ही नहीं हमारे कामकाज में डॉक्टर लोग भी अड़ङगा लगाते है किडनी, लिवर, हार्ट, कैंसर जैसी बीमारियों को तो वे यूँ दूर कर देते हैं, कि हमारे धनवंतरि भी दांतो तले अंगुली दबाते हैं। न बाबा न तुम कलयुगी मनुष्य अब विश्वास के लायक नहीं हो तुम वाक्चातुर्य में प्रवीण हो तो यह बताओं कि जब मरना ही है, तो इतना सोच विचार किस लिए? तुमने श्रीमद्भागवत गीता का जिक्र किया है, तो तुम्हें मालूम होगा कि जीर्ण वस्त्र की तरह देह को त्यागना ही मृत्यु है, उस पर इतना मोह क्यों? इस पर मैंने कहा कि महाराज अभी मेरा वस्त्र इतना जीर्ण भी तो नहीं हुआ है। यमराज बोले बेफाल्तू की बातें मत करो जन्म मरण और परण में मनुष्य का कोई हस्तक्षेप नहीं होता है और पारिवारिक व्यवस्था आधी की दलील में भी कोई दम नहीं है, दूसरों को मरता देखकर भी तुमको समझ नहीं आई। बाते तो तुम बड़ी-बड़ी करती हो, खैर तुम्हारी इन्ही बातो से मैं फ्रेश महसूस कर रहा हूँ, वरना जहाँ जाता हूँ वहाँ रोना-धोना कल्पना आदि सुनकर मेरा ब्लड प्रेशर हाई हो जाता है। आज पहली बार तुमसे मिलकर अच्छा लगा इसलिए तुम्हें मैं कुछ समय के लिए मोहलत देता हूँ, पर मेरा यहाँ आना अकारथ नहीं जाता है।

अतः किसी अन्य व्यक्ति का नाम तुम बताओं जिसे मैं ले जा सकूँ, मैंने कहा महाराज, मैं ऐसा काम कैसे कर सकती हूँ, वैसे मैं आपको याद दिला दूँ कि एक बार सावित्री ने सत्यवान के प्राण आपसे वापस लिए थे और उसके बदले में आपने किसी अन्य व्यक्ति को ले जाने की बात भी नही कही थी। यमराज बोले वह तो एक अपवाद था, पर यहाँ तो ऐसा कोई कारण नहीं है, अतः जल्दी से कोई व्यक्ति का नाम बताओं वरना तुम्ही चलो। मैंने सोचा कि किसी असहाय वृद्ध अत्यंत बीमार अपंग मानसिक रोगी का नाम ले दूँ पर मुझे मेरे जमीर ने बोलने नहीं दिया अचानक एक नाम कौंधा आतंकवादी! हाँ महाराज आप किसी आतंकवादी को ले जाईयें जिस को सजा देने में कोर्ट को भी काफी समय लगता है और उसकी सुरक्षा में गरीब जनता के करोड़ों रूपये खर्च होते हैं। यमराज को यह सुझाव पसंद आया उन्होंने कहा ठीक है, पर अगली बार कोई बातचीत नहीं होगी सीधे तरीके से मेरे साथ चलना होगा, मैंने चहक कर कहा शत प्रतिशत वचन देती हूँ, संतुष्ट होकर यमराज महोदय अपने अन्य ग्राहक की खोज में रवाना हो गए। समय की कीमत समझते हुए मैंने शीघ्र ही उत्साह से महाप्रयाण की तैयारियाँ आरंभ कर दी कि जैसे मैं अभी दर्शनीय स्थल स्विट्जलैंड जा रही हूँ, पर शीघ्र ही वास्तविकता का कटु सत्य मेरे सामने आ गया वार्डरोब में सजी अपनी साड़ियाँ, घर का फर्नीचर डबल बेड एक-एक करके जमा किए बर्तन भाण्डे आदि को देख-देख कर मेरी आँखों से गंगा-जमुना बहने लगी। फिर मेरे निधन के पश्चात बच्चों, पति और रिश्तेदारों आदि के आँसू रूलाई और उदासी तथा दुःख से भरे चेहरों का विचार कर मैं फफक पड़ी। सच में मनुष्य जन्म को इतना सामान्य समझना और देह को जीर्ण वस्त्र कहना और! बात है, तथा अध्यात्म की बड़ी-बड़ी बातें करना और! बात है, और उस पर अमल करना तो बिल्कुल ही अलग! मैं सिसकियाँ

भरने लगी अचानक दूध वाले की आवाज ने मुझे जगा दिया, अब मैं पुनः जागृत अवस्था में थी, सपने ने मुझे आगे की राह दिखा दी थी, उस दिन से मैंने अंतिम यात्रा की तैयारी आरंभ कर दी है और भरसक पुण्य के कार्य करने लगी हूँ। गीता जी की यह पंक्ति सुख-दुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जया-जयौ मेरे रोम-रोम में समा चुका है। लाइफ एक्सटेंशन के लिए मैं भगवान को तहे दिल से धन्यवाद दे रही हूँ।

अब मैं इस दुर्लभ मानव जीवन को वर्तमान में स्थित रह कर अनाशक्ति के साथ बिना किसी अपेक्षा और उपेक्षा पर ध्यान दिये भरपूर आनन्द और उल्लास के साथ जी रही हूँ।

न जाने किस घड़ी में तेरा (यमराज जी से) मेरा सामना होवे, नजर पड़ जाए मुझ पर तेरी, मेरा राम नाम सत्य हो जाए।

टी. वी. चेनल से बदलती मानसिकता

सर्वप्रथम हम मानसिकता के ऊपर विचार करेंगे मानसिकता का सीधा अर्थ होता है, मन की स्थिति या मन की दशा विभिन्न परिस्थियों और दृश्य तथा श्रव्य स्थितियों में हमारी मानसिकता विभिन्न होती है, संक्षिप्त में प्रसन्नता का अवसर हो या दुःख का हमारी मानसिकता तदनुसार हो जाती है, परंतु मानसिकता का अर्थ इतना संकीर्ण भी नहीं हैं। आचार्य रजनीश ने कहा है, कि मनुष्य के द्वारा अनेक प्रकार के आहार ग्रहण किये जाते है, जैसे- मुख के द्वारा आँखों के द्वारा नासिका के द्वारा, कान के द्वारा, और स्पर्श के द्वारा। मुख के द्वारा आहार ग्रहण यानी भोजन करना सर्व विदित है। इसके अतिरिक्त मुख के द्वारा मधुर और कटफ वाणी बोलने का कार्य भी किया जाता है। आँखों के द्वारा आहार ग्रहण का तात्पर्य है, कि वह प्रत्येक प्रभाव जो आँखों के माध्यम से हमारे मन पर अपनी छाप छोड़ता है। जैसे दूर दर्शन के धारावाहिक नृत्य, विज्ञापन, नाटक तथा विभिन्न स्थानों पर लिखे अनेक प्रकार के नारे तथा स्लोगन्स। स्पर्श के द्वारा आहार ग्रहण का तात्पर्य है, किसी वस्तु अथवा व्यक्ति के स्पर्श से उत्पन्न मानसिक स्थिति यानी मानसिकता। इसी प्रकार कान के द्वारा आहार ग्रहण करने से तात्पर्य है, वे सभी अच्छे-बुरे मधुर और कटु, उच्च और धीमी आवाज वाले गीत संगीत और विभिन्न् प्रकार की आवाजें आदि। हमारे शास्त्रों में कहा गया है, कि जैसे हमारा आहार वैसा ही हमारा मन होगा। अर्थात् जैसा होगा अन्न वैसा होगा

मन और जहाँ तक मन का प्रश्न है उसे सदैव आनंददायक और मनोरंजक वस्तुऐं और बातें ही अच्छी लगती हैं, जिससे उसकी मानसिकता आनंदमय बनी रहे। काम करने से उत्पन्न अपने श्रम की थकान मिटाने के लिए उसने-सदा ही अपने रास्ते खोजे हैं। खेलकूद नाटक संगीत सिनेमा पठन-पाठन तथा भ्रमण और तैराकी के साथ-साथ उसने टी.वी. चैनल को भी अपने मनोरंजन का माध्यम बनाया है। जब से टी.वी. चैनल अस्तित्व में आया है, लोगों की जीवनशैली में एक महत्वपूर्ण बदलाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। एक ओर जहाँ लोगों की मानसिकता में विचार स्वतंत्र दृष्टिगोचर होता है, वहीं दूसरी ओर बाल अपराध, हिंसा एवं नैतिक मूल्यों के मापदंडों में भी महत्वपूर्ण बदलाव आया है। एक बहुत पुरानी कहावत है, कि साहित्य समाज का दर्पण है। किंतु वर्तमान बदलाव समय के टी.वी. युग को देखें तो हमें इस कहावत में परिवर्तन करते हुए कहना पड़ेगा कि टी.वी. समाज का दर्पण है। इस कथन का विश्लेषण करें तो ज्ञात होगा कि पकड़े जाने के बाद अपराधी स्वीकार करता है, कि उसे चोरी डकैती अथवा हत्या का आइडिया सिनेमा या दूरदर्शन से मिला है। टी.वी. धारावाहिक शक्तिमान को देखकर छोटे बच्चों द्वारा शक्तिमान जैसी कारगुजारियाँ करने का प्रयास इस बात का स्पष्ट प्रमाण है। हाथ कंगन को आरसी क्या? ऐसी बातें सिद्ध करती हैं कि टी.वी. चैनल से दर्शकों की मानसिकता बदल रही है। हमारी भारतीय संस्कृति एक पत्नीवाद को आदर्श मानती है, परंतु कुछ धारावाहिको में ऐसा कुछ बता दिया जाता है, जिससे समाज में तलाक जैसी त्रासदी का होना और

नई शादी करने का प्रचलन का प्रतिशत बढ़ने लगा है। बच्चों की मानसिकता भी वही हो रही है, जो उन्हें ग्रहण नहीं करना चाहिए वह ग्रहण कर रहें हैं। परंतु उपर्युक्त सब लिखने का तात्पर्य मेरा यह कदापि नहीं है कि टी.वी. चैनल से हमारी मानसिकता पर केवल कुप्रभाव ही पड़ रहा है। किसी भी वस्तु के दो पहलू होते हैं टी.वी. चैनल के दूसरे पक्ष पर विचार करे तो हम देखेंगे कि हमारी संकुचित विचारधारा में परिवर्तन का सबसे बड़ा और सशक्त माध्यम टी.वी. चैनल ही है। बिना कहीं जाए, अपने घर में आराम से बैठकर हम दुनिया भर की सैर का आनंद ग्रहण कर लेते हैं। कई स्थानों की जानकारी के साथ-साथ वहाँ के रीति-रिवाज परंपरा तथा साहित्य और विज्ञान का ज्ञान हो जाता है, फलस्वरूप उचित अथवा अनुचित का निर्णय लेने की क्षमता प्राप्त हो जाती है तथा कूप मंडूकता दूर होकर विशाल दृष्टिकोण बनता है, मनुष्य की यह मानसिकता होती है, कि वह उस वस्तु को प्राप्त करने का प्रयास करता है, जिसका बहुत नाम अर्थात् प्रचार होता है। विज्ञापन के इस अंधे युग में वस्तु की गुणवत्ता का कोई मापदण्ड नहीं है, कोई भी वस्तु चाहे वह साबुन, तेल, मंजन अथवा गहने, कपड़े, खाद्य पदार्थ आदि हो उपभोक्ता विज्ञापन का शिकार होकर ही रहता है, केवल उपयोग करने के बाद ही उसे पता लगता है कि तथाकथित वस्तु की प्रशंसा कितनी खरी और कितनी खोटी है एक प्रसिद्ध विद्वान के अनुसार विज्ञापन केवल प्रचार ही नहीं एक सामाजिक अर्थिक प्रक्रिया भी है, जिसकी वजह से संस्कृति भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहती है। बुद्धिजीवी वर्ग के मुताबिक यह एक फेंटेसी

प्रचार है। जो भारतीय संस्कृति के लिए अत्यंत घातक है। एक प्रसिद्ध समाज शास्त्री डेविड रीजमेन ने तीन तरह से व्यक्तित्व की कल्पना की है।

1/ स्वतंत्र (अंतः विवेक से निर्देशित)

2/ परम्पराओं से परिचालित

3/ एवं अन्य द्वारा संचालित

इस परिप्रेक्ष्य में सिंहाव लोकन करे तो आज की भागवादी संस्कृति में अंतः विवेक असमंजस की स्थिति में है। परम्परा शक्ति कमजोर और विकृत हो गई है। विज्ञापनों द्वारा मनुष्य की मनोभावनाऐं, रूचियाँ एवं आदते प्रभावित हो रही है। यह सब टी.वी. चैलन से बदलती मानसिकता का ही परिणाम है। न्यूयार्क एडवरटाइजिंग एजेंसी के रिसर्च डायरेक्टर के अनुसार विज्ञापनों ने समाज में सांस्कृतिक संकट खड़ा कर दिया है, विज्ञापन संस्कृति आज व्यक्ति एवं समाज के लिए कुपोषण के रूप में सिद्ध हो रही है। टी.वी. संस्कृति ने मनुष्य को प्राकृतिक जीवन से दूर कर दिया है। बनावटी पन एवं कृत्रिमता अपना परचम लहरा रहे है। विज्ञापन का मोहक आकर्षण युवा एवं बच्चों पर विशेष रूप से अपना प्रभाव डालता है, निरंतर टी.वी. दर्शन से उसमें बताई बातें उनके मन में दृढ़ता पूर्वक अपना शिकंजा कस लेती हैं, फल स्वरूप अच्छे और चरित्रवान नागरिक होने के बदले युवा वर्ग निपुण डांसर, धनी व्यक्ति और व्यक्तित्व पर अधिक ध्यान देने वाला हो जाता है। अतः यदि हमें नागरिकों का समुचित विकास एवं व्यक्तित्व का निर्माण करना है, तो टी.वी. चैनल को भी उसी के

अनुसार संचालित करना होगा, क्योंकि टी.वी. देखने से हमारी मानसिकता में बदलाव आता है।

मेरा भारत महान या ब्रिटेन ग्रेट?

हमें अपनी भारत माता पर नाज़ हैं। यहाँ के धर्म, संस्कृति, पम्परा, रीति-रिवाज अध्यात्म, योग ध्यान, ऋषि-मुनि, शास्त्र, वेद-पुराण, स्त्री का अस्तित्व और सहनशीलता आदि खुबियों पर हमें घमंड है, हमारे देश में महान साहित्यिक विभूतियाँ पैदा हुई हैं, दानी सपूत और न्याय प्रिय हस्तियों का जन्म हुआ है। अपने देश पर मर मिटने वाले वीर और वीरागनाऐं हुये है।

विभिन्नता में एकता का जीता-जागता उदाहरण है, हमारा देश और तो और यह सोने की चिड़िया भी कहा जाता था, पर आज यही आदर्श देश भ्रष्टाचार, हिंसा, संप्रदायवाद, बलात्कार और अभावों का केन्द्र बन गया है। करोड़ों रूपयों की योजनाऐं बनने के बाद भी लोगों को पीने का पानी बिजली, सड़क और निवास के लिए संषर्घ करना पड़ रहा है।

उधर स्विस बैंक में देश के नेताओं का पैसा सोने के बिस्किट से ईंट और ईंट से अनेक ईंटों में तब्दील हो रहा है। कानून केवल अंधा ही नहीं बहरा और गूँगा भी हो चूका है। अनुशासन और ईमानदारी यहाँ से उसी प्रकार से गायब हो गए हैं, जैसे नयें पैसे के बानने के बाद से चाँदी का रूपया, ताँबें का धेला (छेद वाला) पाई, इक्ननी, दुअन्नी और चवन्नी समाप्त हो गई हैं।

इसके विपरित यदि मै कहूँ कि ब्रिटेन अथवा अमेरिका में नागरिकों की सुख-सुविधा का बहुत ध्यान रखा जाता है, वहाँ की पुलिस सख्त और ईमानदार है, जिससे जनता भी अनुशासित है।

वहाँ सड़कें साफ-सुथरी हैं, कचरे का निस्तारण उत्तम तरीके से होता है।

तथा वाहनों की गति भी निर्धारित है, लोग क्यूँ मैं लगाकर अपनी बारी की प्रतीक्षा करते हैं तथा पंक्ति तोड़ने की कोशिश नहीं करते। सुव्यवस्था और सुरक्षा के लिये सुयोग्य कैमरे लगे हैं तथा राष्ट्रपति और आम नागरिकों के लिए समान आचार संहिता है, तो आप किसे महान कहेंगे?

संयुक्त परिवार पर हम गर्व-करते हैं, पर आए दिन के हादसों ने इसकी पोल खोलकर रख दी है। हम चरित्र को लेकर भी पश्चिमी सभ्यता को कोसते हैं, पर हमारे देश में चोरी छुपे हर उम्र की लड़की के साथ प्रभावशाली व्यक्ति जो करते हैं, वह किसी से छुपा नहीं है और उनका बाल भी बाँका नहीं होता, तो सोचिए जरा?

पर्यावरण

आधुनिक समय में हारे जल, थल, आकाश, मन की शांति और तन का स्वाथ्य प्रदूषित होता जा रहा है। प्रदूषण केवल वायुमंडल में ही नहीं होता है, बल्कि वह हमारे शरीर के विभिन्न अंगों के माध्यम से हमारे शरीर एवं मन में भी प्रवेश करता है, आँख, कान, नाक, जीभ, त्वचा, यानी, स्पर्श के द्वारा भी प्रदूषण ग्रहण किया जाता है, दूरदर्शन के भद्दे दृश्य, गंदे गाने, प्रदूषित हवा बासी एवं खराब भोजन, अनुचित वाणी, अनुचित स्पर्श व्यक्ति के प्रदूषित होने का कारण बनते हैं। रक्तबीज की तरह बढ़ती पर्यावरण की समस्या के मुख्य कारण जनसंख्या वृद्धि, विभिन्न प्रकार के कचरे, वाहनों, कल-कारखानों का ज्यादा प्रयोग, वृक्षों की कटाई, नदी में शव तथा अन्य गंदगी का डाला जाना आदि है। सूर्य, जल, वृक्ष, वायु, हमें प्राकृतिक रूप से शाश्वत वरदान के रूप में प्राप्त हुए हैं। इनका हम पूरी तरह से उचित लाभ नहीं उठाते हैं, बल्कि इनका गलत रूप से दोहन करते हैं, जिसका खामियाजा हमें भुगतना पड़ता है। वायुमण्डल की संरक्षण ओजोन परत में छेद हमें बहुत नुकसान पहुँचा रहा है। ग्लोबन वार्मिंग यानी पृथ्वी का तापमान बढ़ जाना बहुत हानिकारक तत्व हैं। प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोंग भी इस समस्या को बढ़ावा देता हैं। लोग पहाड़ों पर जाते हैं और वहाँ पर भी प्लास्टिक आदि का कचरा फेंक कर आते हैं, इस कारण से वहाँ भी अब शुद्ध वायु नहीं है। गोबर गैंस प्लांट लगाया जाना, छत पर पानी इकट्ठा करके उसको रूफ हार्वेस्टिंग करना, वृक्षों को बचाना एवं नये पौधारोपण करना भी पर्यावरण को सुरक्षित रखने का कार्य करते हैं। हस्तकला उद्योग जैसे बनारस की साड़ी कश्मीर की शाल, झाबुआ भेरूगढ़ की

चादर बेरोजगारी के साथ ही प्रदूषण कम कर सकते हैं तथा कारखानों के धुऐं से कुछ सीमा तक मुक्ति दिलवा सकते हैं। हमें वृक्षों का उपयोग जलाने के लिए नहीं वरन् फर्नीचर आदि में जहाँ जरूरी हो वहाँ करना चाहिये। क्योंकि वृक्ष वर्षा को आकर्षित करते हैं। रहीमदास जी ने भी पानी की महत्ता बताते हुए कहा है, कि बिन पानी सब सून। अतः टूटी-फूटी पाइप लाईन रिसते नल पर ध्यान दिया जाना चाहियें। वर्षा के जल का संग्रहण करना बहुत अनिवार्य हो गया है, जो स्वच्छता के साथ-साथ समृद्धि भी लाता है। यदि रेलवे लाईन की भाँति नदियों के जल को नदियों से जोड़ने, एवं समुद्र के संशोधित किये जल का संग्रहण कर उसका उपयोग किया जाए तो पानी की प्रचुरता हो सकती है। जिससे देश में स्वच्छता ज्यादा हो सकती है, तो हमें यह भी उतना ही जरूरी समझना चाहियें। सड़क के दोनो ओर पानी निकासी की व्यवस्था लें। हमारे देश की जनता को रोटी, कपड़ा और मकान जल आदि की आवश्यकता है, उसकी पूर्ति के लिये गंभीरता पूर्वक विचार कर उसका क्रियान्वयन करना चाहिये। प्रदूषण से मुक्ति के लिये धर्म सम्प्रदाय के विवाद में न उलझ कर पर्यावरण पर ध्यान देना चाहिये, तुलसीदास जी ने भी कहा है, कि पर्यावरण संतुलन और संरक्षण, राजा और प्रजा दोनों का ही कर्तव्य होता है। मानसिक प्रदूषण अच्छे साहित्य से दूर किया जा सकता है, धरती माता में रासायनिक खाद तथा कीटाणु नाशक दवा डालने के बदले केंचुआ, गोबर, वृक्षों की पत्तियों का इस्तेमाल करना चाहिए, जिससे खेत की उर्वरता बनी रहती है।

वाट्स एप या वाट्स ऐब

वाट्स एप की ऐब किसको नहीं है? यहाँ-वहाँ सारे जहाँ में इसका राज है। एक बार जो इसके माया जाल में फँसा तो समझ लीजिये अभिमन्यु की भाँति फिर इसके चक्रव्यूह से बाहर निकल पाना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन सा है। यदि किसी संयमी व्यक्ति ने इसका परित्याग कर दिया यानी 'लेफ्ट' कर दिया तो घर के अन्य सदस्यों के मोबाईल में झाँक कर देखने का लोभ संवरण नहीं कर पाता।

वाट्सेप चीज़ ही बड़ी मस्त है। देश ही नहीं विदेश में भी बात करने का रास्ता सरल और त्वरित गति से संपर्क करने का सर्व सुलभ अलादीन का चिराग है और सोने में सुहागा वीडियों काल और कानफ्रेंसिंग काल! विभिन्न देशों में रहने वाले लोग एक साथ बात कर लेते हैं, तो वाट्सेप जहाँ अच्छी बुरी खबर को विद्युत गति से दुनिया भर में पहुँचाने की ताकत रखता हैं, वहीं इसके दुष्परिणाम भी सामने दिखाई देते हैं, जैसे बार-बार वाट्सेप देखने व लिखने से समय और आँखों पर हानिकारक प्रभाव विशेष कर उस अवधि में जब मोबाईल चार्जिंग पर लगा हो।

उस समय में अत्यधिक घातक शक्तिशाली तरंगों का उपयोग होता है, जिसके कारण से लोगों के कान, चेहरे आदि झुलस जाते हैं।

कहने का तात्पर्य अति सर्वत्र वर्जयेत्। यदि वाट्स एप को एक एप ही रहने दें और इसको ऐप में रूपांतरित नहीं करें, तो यह लाभ दायक ही है। बहुत सारे समूह के सदस्य होने के स्थान पर स्तरीय समूह में रहना ही इसका वास्तविक उद्देश्य होना चाहिये।

हमारी हिन्दी

हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है। यह हमारे भारत की पहचान उसी प्रकार से है, जैसे हमारा तिरंगा ध्वज एवं जन-गण-मन राष्ट्रगीत।

हिन्दी भाषा के शब्दों की समानता न केवल अपनी माता संस्कृत से और अपनी अन्य भारतीय भाषाओं रूपी बहनों से है, वरन् अपनी विदेशी सौतेली बहन अंग्रेजी से भी है।

उदाहरण के लिये हम कुछ शब्दों को लेते है-

1. मातर, माता, माँ, अम्मा, अम्मी, मम्मा, मदर।
2. भ्राता, भाई, भाऊ, भ्राता से मिलता ब्रदर।
3. अंतर, अंदर।
4. द्वार, दरवाजा, दरवज्जाडोअर।
5. एकम्, एक।
6. द्वौ, दो, दोन।
7. त्रण, तीन, थ्री।
8. चत्वारि (चतुर्थ), चार।
9. पंचम्, पाँच, पंच।
10. षष्टम्, छः, छे।
11. सप्तम्, सात, सेवन।
12. अष्टम्, आठ, एट।
13. नवम्, नौ, नव, नाइन।
14. दशम्, दस, दहा आदि।
15. वांडर, रड़बडाना।
16. उलूक, उल्लू, आउल।
17. पात्र, पाट।

कुछ शब्द ऐसे हैं, जो हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं तथा अंग्रेजी से मिलते जुलते हैं, जैसे- समिति-कमिटी। सहारा-सपोर्ट। सूर्य-सन। मास्टर-मालिक।

उपदेश

एक बहुत प्रसिद्ध महात्मा जी हमारे शहर में पधारने वाले थे निश्चित समय पर वह अपने एयर कंडीशन कार से उतरे और अपने लवाजमें के साथ स्टेज की ओर बढ़े। लोगों ने खड़े होकर उनका अभिवादन किया और वह अपनी गद्दी पर आसीन हो गए।

मुस्कुराते हुए उन्होंने माइक हाथ में लिया और कुछ बोलना चाहा पर खराब माईक के कारण उनकी आवाज श्रोताओं तक नहीं पहुँच पाई और वह वहाँ खड़े कार्यकताओं पर बरस पड़े। ताबड़तोड़ माईक ठीक कर दिया गया।

अब महाराज जी की मुस्कुराहट लौट आई, जनता की ओर वे मुस्कराते हुए बोले कि मनुष्य को हमेशा मधुर वाणी में बोलना चाहिए। इससे मनुष्य तो ठीक है, जानवर भी खुश हो जाता है, उसकी हिंसक प्रवृति भी समाप्त हो जाती है और वह मित्रवत् हो जाता है। किसी की आत्मा को खुश करने से परमात्मा खुश होता है और इसमें कुछ पैसा भी नहीं लगता।

उनकी बात सुनकर मुझे यह कहावत याद आ गई कि 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे, जे नर आच रहिं, नहिं घनेरे।'

गाय के गोबर से बने कंडों का महत्व

गाय के गोबर से बने कंडों का उपयोग करने से वातावरण, पर्यावरण और देश को अनेक लाभ होते हैं। देशी गाय के गोबर से बने कंडों का उपयोग होलिका दहन आदि के दौरान करने से वातावरण की दूषित कार्बन डाई-आक्साईड का नाश होता है और स्वास्थ्य वर्धक वातावरण का निर्माण होता है। जैसे यज्ञ और हवन आदि के धुऐं से होता है। इतना ही नहीं हानि कारक प्रदूषण से भी मुक्ति मिलती है। अतः हमें देशी गाय के गोबर का सदुपयोग कर गौमाता का ऋण, अल्प मात्रा में ही सही चुकाना चाहिये। पेड़ पौधे पर्यावरण-संरक्षण और वर्षा आकर्षित करने के लिये अति आवश्यक हैं। अतः उनको काटना हमारे लिये अनुचित और नुक्सान देह है। अमेरिका आदि में फर्नीचर बनाने के लिये विदेशों से लकड़ी मँगवाई जाती है। देश की लकड़ी (वन आदि की) बचाई जाती है। जिससे उन देशों में घने जंगल हैं और नदियों में भरपूर पानी सदैव रहता है।

हमारे देश में बेरहमी से जंगल काट कर मकान खड़े कर दिये जाते है, जिससे अनेक नदियों के होते हुए भी पानी की कमी हो जाती है, नदियों के किनारों का कटाव भी होता है। हमारा देश कृषि प्रधान देश है। अतः पानी की कमी बहुत बड़ी सजा जैसा हो जाता है। इतना ही नहीं पीने के पानी तक की समस्या हो जाती है।

अतः समस्त देश वासियों से अनुरोध है, कि वे लकड़ी का उपयोग न कर गौशाला से कंडें खरीद कर होली आदि में उपयोग करें। इससे गौमाता के संरक्षण के साथ ही गौशाला संचालकों को सुचारू रूप से गौशाला संचालकों के सहयोगी बन सकेंगे।

वो और हम

नालों के किनारे बनी गरीब, मजदूरों की झोंपड़ियाँ, झोपड़ी के पास बने स्नानागार, नालों में मौजूद विभिन्न कपड़ों आदि की गंदगी और आस-पास खेलते गंदे कपड़ों में बच्चों, ओह! देखकर ही मन विचलित हो गया। क्यो वे स्कूल जाते होंगे? अच्छा भोजन, वस्त्र आदि क्या उनके लिये स्वप्न होगा? गर्मी और वर्षा में मच्छर तथा बदबू वे कैसे सहन कर पाते होंगे। सच में दुनियाँ भी अजीब है। कहीं भोजन की अधिकता से अपच तो कहीं भोज्य पदार्थो की कमी से कुपोषण एवं विभिन्न बीमारियाँ। यह मानव जीवन का पीड़ा दायक दृश्य है। हम बचपन के आँगन और नीम, पीपल, जामुन तथाअमरूद के वृक्षों को याद कर उनके न होने का अफसोस करते हैं और वो लोग! शायद इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते।

एक बेमेल पर सफल विवाह

कहा जाता है, कि विद्यात्तमा विक्रमादित्य की रूपवती, गुणवती एवं विदुषी पुत्री थी। वह सभी शास्त्रों, वेदों तथा पुराणों आदि में निष्णात थी। विवाह के संबंध में उसकी शर्त थी, कि जो विद्वान् पुरूष उसे शास्त्रार्थ में हरा देगा, उससे वह विवाह कर लेगी। अन्यथा उसे अपना अनुचर बना लेगी। एक के बाद एक अनेक पंडित उससे शास्त्रार्थ कर परिणय करने की आकांक्षा से आये पर सभी पराजित हो गये।

क्षुब्ध होकर प्रतिशोध की भावना से प्रेरित होकर उन पराजित पंडितों ने विद्यात्तमा का विवाह किसी महामूर्ख से करने का सोचा। जिससे उसे अर्थात् विद्योत्तमा को आजीवन पति की मूर्खता का दुःख झेलना पड़े। षड़यंत्रपूर्वक उन्होंने कालिदास को शास्त्रार्थ के लिए प्रस्तुत किया। कालिदास के मौन-व्रत धारण का साधन साधकर उन पंडितो ने विद्योत्तमा से उनका शास्त्रार्थ कराया। कालिकदास क्षरा विद्योत्तमा की एक अंगुली का उत्तर दो अंगुलियों से तथा पाँच अंगुलियों का उत्तर मुठ्ठी बांधकर प्रदर्शित किया गया। जिसे पंडितों ने इस प्रकार विवेचित किया कि ईश्वर एक है पर उसकी उपासना सगुण तथा निगुर्ण दो प्रकार से की जाती है। इसी प्रकार मुठ्ठी का अर्थ यह विश्लेषित किया गया कि यद्यपि महाभूत पाँच है, परन्तु उन सबसे ही एक शरीर का निर्माण होता है। अकेला कोई भी महाभूत अपने आप में सक्षम नहीं हैं।

विद्योत्तमा उन पंडितो की व्याख्या के जाल में फँस गई और कालिदास की विद्वत्ता के सम्मुख नतमस्तक हो गई। फलस्वरूप कालिदास और विद्योत्तमा का परिणय हो गया। कहती है, कि विवाह की प्रथम रात्रि को ही जब कहीं से ऊँट के बोलने की आवाज आई तो विद्योत्तमा कालिकदास से बोली ''उष्ट्र वदति"। कालिदास तो जड़मति थे। विद्योत्तमा के दो-तीन बार कहने पर भी वे उष्ट्र - उष्ट्र कहने लगे। विद्योत्तमा को संदेह तो शास्त्रार्थ के समय भी था, कि कालिदास उतने विद्वान् नहीं है, जितना उन्हें दर्शाया जा रहा है। परन्तु लोकलाज अथवा अपनी शर्त के कारण वे अधिक कुछ बोल नहीं सकी। अब-जब उनका विवाह हो गया और कालिदास ''उष्ट्र - उष्ट्र" कहने लगे तो उनकी मूर्खता का ज्ञान विद्योत्तमा को हुआ। उन्होंने विवाह को तो अंगीकार कर लिया पर कालिदास को पति रूप में उस समय तक स्वीकार नहीं किया जब तक वे विद्वान् एवं प्रकांड पंडित नहीं हो जाते। यह उसके स्वाभीमान एवं पराजित पंडितों के अंहकार की तुष्टि का प्रश्न था। अतः जैसाकि कहा गया है, कि ''नारी-पुरूष की प्रेरणा होती है"। उन्होंने कालिदास को ज्ञानी, पंडित और अपने समकक्ष विद्वान् बनाने का बीड़ा उठाया। कालिदास भी अपनी विद्वत्ता के सम्मान में तथा स्वयं को पत्नी के अनुरूप निर्मित करने के कार्य में जुट गए। माँ काली की अनुकम्पा एवं स्वयं के स्वाध्याय से जड़मति कालिदास महाकवि कालिदास के रूप रूपान्तरित हो गए। निश्चित ही विद्योत्तमा को इसका पूरा-पूरा श्रेय जाता है।

कहते है! कि जब कालिदास संस्कृत के प्रकांड पंडित बनकर घर लौटे तो द्वार पर ही विद्योत्तमा ने उनसे पूछा ''अस्ति कश्चित् वाग्विशेष"। कालिदास ने विद्योत्तमा के इन तीन वाक्य खंडो पर तीन काव्यों की सर्जना की। ''अस्ति" से कुमार संभव ''कश्चित्" से मेघदूत तथा ''वाग्विशेष" से रघुवंश की रचना की। कुमार संभव में कार्तिकेय, रघुवंश में रघुकुल तथा मेघदूत में यक्ष तथा रूपवान् यक्षिणी का वर्णन है। ऐसा माना जाता है, कि यक्षिणी के वियोग का वर्णन और कुछ नहीं वरन् विद्योत्तमा से कालिदास के वियोग का वर्णन है। (जब कालिदास विद्वान् बनने हेतु विद्योत्तमा से अलग रहे थे।)

विद्योत्तमा और कालिदास के विवाह को यदि आधुनिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो बहुत सी अनुकरणीय बातें हमें ज्ञात होगी। जैसे कि एक बार विवाह हो जाने पर उसका आजीवन निर्वाह करना। दूसरा पति अथवा पत्नि में से एक के अयोग्य अथवा समकक्ष्ज्ञ या अनुकूल न होने पर दूसरे साथी को अपने तुल्य या मनोनुकुल बनाने का प्रयास करना तथा तीसरा पति अथवा पत्नी को जो भी उनमें से योग्य हो शेष अयोग्य साथी को योग्य बनने की प्रेरणा देना तथा उसके प्रसुप्त गुणों को उभारने में सहयोग करना है, न कि उसकी खिल्ली उड़ाना या विवाह विच्छेद करना।

कहते है, कि कालिदास के देहावसान के पश्चात् कुमार संभव के सातवें अथवा आठवें सर्ग के बाद उक्त काव्य को विद्योत्तमा ने ही पूर्णता प्रदान की। परन्तु यह अत्यन्त दुःख का

विषय है, कि इतनी विदुषी होते हुए भी विद्योत्तमा के नाम का साहितय कहीं भी उपलब्ध नहीं है। जैसे कि गार्गी मेत्रैयी तथा अन्य विदुषी स्त्रियाँ गुमनामी के अंधेरे में खो गई। यह शायद पुरूष प्रधान सामाजिक संरचना का ही प्रतिफल प्रतीत होता है। किंवदंति यह भी है, कि कालिदास रचित ग्रंथ वास्तव में विद्योत्तमा द्वारा ही लिखे गये है। ताकि विद्योत्तमा अपने पति की विद्वत्ता एवं सम्मानजनक स्थिति को स्थापित कर सके। साथ ही अपने आत्म सम्मान को भी अक्षुण्ण रख सके। जो भी हो इस विषय में अनुसंधान की महती आवश्यकता है।

व्यक्तित्व दर्पण

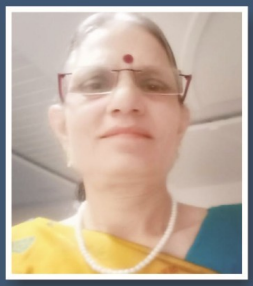

नाम - उर्मिला मेहता

जन्म - 28 अप्रैल 1949, रतलाम (म.प्र.)

शिक्षा - एम.ए. हिन्दी (1971) अंग्रेजी साहित्य, बी.ए.

पता - ए.-2, फ्लेट नं. 602, अवासा ए.बी. रोड़
बीजलपुर, इन्दौर (म.प्र.)

मो. - 9981312686

ई मेल - mehta.urmila2012@gmail.com

कार्यक्षेत्र - अध्यापन - 1. नागपुर वि.वि. द्वारा संचालित 'इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल वर्क' नागपुर में स्नातक कक्षाओं तक का हिन्दी अध्यापन। 2. स्कालर्स होम भोपाल 3. श्री गुरु तेग बहादुर पब्लिक स्कूल रतलाम में भी हिन्दी तथा संस्कृत का अध्यापन।

खेलकुद - 1. सागर युनिवर्सिटी की युनिवर्सिटी चैंपियन- टेबल टेनिस। 2. ऑल इंडिया नार्थ जोन कानपुर में टेबल टेनिस में क्वार्टर फायनल तक पहुँचने का गौरव। 3. स्कूल व कॉलेज में बेडमिंटन, हाय जम्प, लॉग जम्प, रेस, भाला फेंक, गोला फेंक, कैरम आदि के विजेता होने के प्रमाण पत्र एवं कप्स। 4. रोटरी क्लब में विजेता व उपविजेता के स्मृति चिन्ह।

प्रकाशन - लेखन - विद्यार्थी जीवन से साहित्य लेखन में सक्रिय। महाविद्यालयीन पत्रिकाओं तथा स्थानीय समाचार पत्रों में लेखन के पश्चात् नई दुनिया के 'अधबीच' 'खुलाखाता' एवं दैनिक भास्कर के 'राग दरबारी' स्तंभ में व्यंग रचनाएँ प्रकाशित। आकाशवाणी भोपाल तथा इंदौर से अनेक वार्ताएँ एवं काव्य प्रसारण।

प्रकाशित पुस्तके - 1. उर्मिला (खण्ड काव्य) 2. ऐसा आपको कब से है? (व्यंग्य संग्रह)
3. भावांजलि (काव्य संग्रह) 4. ऐसे बनाई मैने अपनी पहचान (आलेख संग्रह)
5. एक कहानीकार की रचना प्रक्रिया (व्यंग्य संग्रह)
6.पर्यावरण संरक्षण के परंपरागत तरीके (आलेख संग्रह)

सम्मान अंतरा शब्द शक्ति सम्मान 2019

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-86666-80-2

मूल्य- 60/-